ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

नव वामपंथी कविता में व्यक्त 'गुम होते कायनात और जनता की संस्कृति का दस्तावेज़' : 'खुदाई में हिंसा'

पैजू के

शोध छात्र हिन्दी विभाग
कोच्चिन विश्वविद्यालय
कोच्चि केरल
shyjukas@gmail.com

बद्रीनारायण एक प्रमुख समकालीन कवि हैं। इन्होंने अपनी कविताओं के जरिए वर्तमान समाज में व्याप्त समस्याओं की ओर अपनी लेखनी चलाई हैं। उनकी कविताओं में देखें तो प्रमुख रूप से स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, पारिस्थितिक विमर्श देखने को मिल जाएंगे। उनकी हर एक कविता जो है अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है। यानी कि एक प्रतिरोधी स्वर उनकी हर कविताओं में दिखाई देती हैं। यह उनकी कविताओं की एक खासियत है। साधारण जनता को अत्याचारों के खिलाफ लड़ने के लिए एक धैर्य इनकी कविता देती है।

'खुदाई में हिंसा' बद्रीनारायण की एक प्रमुख कविता संग्रह हैं। जिसमें अनेक प्रकार की समस्याएँ शामिल हैं - चाहे वह दलित की समस्या हो आदिवासी या शोषित पीड़ित जनता की समस्याएँ। पर्यावरण पर होने वाले अन्याय अत्याचार और मानव के हिंसा के कारण अपनी जान खो बैठने वाले पशु पक्षियों, इस प्रकार अनेक समस्याओं का उल्लेख इस कविता संग्रह में देखने को मिलता हैं। साथ ही साथ जनता की पीड़ा का उल्लेख भी शामिल हैं।

प्रकृति से पशु-पक्षी गायब होने लगे हैं। वन का नाश हो रहा है और उसमें रहने वाले हर कोई अपनी जिंदगी खो बैठा है। जंगल की शोभा बढ़ाने वाली चीजें हैं; पेड़, पौधे जानवर। लेकिन आज उसी शोभा को नष्ट करने के लिए इन्सान हिचकते नहीं है। आज लोगों के दिल में अब किसी भी प्रकार की कोई भी मानवीय संवेदनाएं नहीं है। वे किसी को भी मारने के लिए तैयार हैं। आज साधारण से साधारण एवं छोटे से छोटे जीवों का नाश हो रहा है। इसलिए कवि अपनी कविता में प्रतिरोधी स्वर के साथ कहते हैं -

" कितनी तेजी से

कविताओं से चिड़ियां गायब होती गई हैं
कितनी तेजी से गायब होते गए हैं
कविताओं से पेड़।"[1]

कविता आम जनता के लिए है। आज कल की कविताओं में साधारण जनता की हालत, सुख-दुख आदि का चित्रण होना चाहिए। मगर उसके ही खिलाफ है आज की व्यवस्था। जनता को उच्च वर्ग के लोग हर कहीं से निष्कासित कर रहे है। आम जन को समाज में कोई स्थान नहीं देता है।

"गरीब
कि क्यों कविताओं से गायब होता गया है
गरीब गुरबा आदमी
हाल के सालों में जिन जिन ने लिखी है
गरीबी पर कविताएं
वे क्यों देश निकाला काट रहे हैं।"[2]

आम जनता के पक्ष में रचना करने वालों को देश से निकाला जाता है। जनता अपना गुजारा बहुत कष्ट से कर रही है। गरीबी के कारण कोई भी जिंदगी ठीक से बिता नहीं पा रहा है। अपनी हालत पर दुखित होने के कारण आम जनता नदी में डूब कर आत्महत्या कर रही हैं। मगर साधारण जनता गरीबी के खिलाफ खड़े होकर प्रतिरोध भी करती है। पर कोई फायदा नहीं ।अंत में उच्च वर्ग के लोग ही जीत जाते हैं। ऐसा क्यों होता है? सारे काम, साधारण जनता के द्वारा किए जाने पर भी अंत में उनको ही शिकार होना पड़ता है।

"लेकिन यह जो दिख रहे हैं गरीबी के खिलाफ सनातन संघर्ष में लिप्त
यह कौन लोग हैं
खाए जा रहा है मुझे यह सवाल
मैं पीछे का इतिहास उलट कर देखता।"[3]

आजकल स्त्री की हालत भी बहुत बुरी है। स्त्री मां है। उनका इज्जत करना चाहिए। मगर आजकल उसे भी खारिज कर दिया जाता है। नारी की खराब हालत पर कवि आवाज उठाता है -

"कितनी तेजी से खारिज हुई है कविताओं से मां और प्रेमिका की यादें।"[4]

अस्सी के दशक के बाद की स्थिति कुछ अलग ही है। अब स्त्री हो, दलित हो, आम जनता हो या कोई और भी हो वह अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने लगे हैं।

"कविताओं के इतिहास में आ गया एक ऐसा मोड़
कि मध्यवर्गीय इच्छाओं के खिलाफ प्रतिरोध
लगभग असंभव सा हो गया।"[5]

इस पंक्तियों से हमें यह पता चलता है कि आम जनता पर अत्याचार करना और आवाज़ उठाना अब हर किसी के बस में नहीं है। वे प्रतिरोध करने के लायक बन चुके हैं।

कविताओं में अब अनुवाद की प्रमुखता बढ़ने लगी है। कविताओं में देशी भाषाओं का अब कोई स्थान ही नहीं रह गया है। देशी शब्दों के बदले विदेशी शब्दों के भरमार हो गए हैं।

"छा गई एसी की टिकटें, छा गया
हिंदी कविताओं का विदेशी भाषाओं में भदेस अनुवाद
चुप्पी, चीख सिसकी गान
कविताओं में सारे भाव व्यर्थ हो गए।"[6]

कवि पूछते हैं कि न जाने क्यों भाषा अंधी हो गई है। प्रतीक बहरे हो गए। पाठक गूंगे हो गए है। इस प्रकार हिंदी समाज को लग गई है सुनबहरी। बहुत तेज़ी के साथ देशी भाषाओं का सारा अर्थ बेअर्थ होने लगा है। कविताओं में हर एक शब्द का भाव अलग हो गए हैं। भाषाई सभ्यता संकट में है। देशी भाषाओं के स्थान पर विदेशी भाषाओं का भरमार हो गई है।

"कितनी तेजी से कविताओं में सब कुछ व्यर्थ होने लगा है
यह ज़रूर इस सभ्यता का सर्वग्रासी संकट है
कि शब्दों से अलग हो गए हैं भाव।"[7]

'संस्कृति' नामक कविता में प्रतिरोध करने वाले एक व्यक्ति का चित्रण है। उसके चेहरे पर राष्ट्रीयता भरी है। अपनी संस्कृति को लेकर वह चिंतित है। हर कहीं अपनी संस्कृति का भरमार चाहने वाला है। चेहरा

पूर्ण रूप से राष्ट्रीयता से भरा है। उसका मन देशज है। उसकी आंखें स्वदेशी विराटता ली हुयी हैं। अपनी देश की संस्कृति को बरकरार रखने के लिए उसके मन के अंदर जिज्ञासा है –

"उसका चेहरा राष्ट्रीय जैसा था
मन देशज
उसकी आंखें स्वदेशी विराटता से भरी थी।"[8]

स्त्री के साथ अन्याय करता है। यदि स्त्री अन्य जाति की हो तो अन्याय और भी बढ़ता है। बाज के समान अत्याचारी लोग उन पर आक्रमण करने के लिए तैयार रहते हैं। स्त्री यदि निचले तह की हो तो उस पर ठोकर मारने के लिए हर कोई तैयार रहता है। कवि स्त्री के ऊपर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ प्रतिरोध करता है-

"उसने सोचा कि बाज जैसे चटपटा मारते
उसके अपने ही सनकी
परधर्म, परजाति की उस कुंवारी लड़की के संग
कर न बैठें बलात्कार।"[9]

स्त्री हर समय शोषित होती रहती है। लोग उसके जिस्म मात्र देखते रहते हैं। जानवरों के सामान स्त्री के साथ व्यवहार होता है। ऐसी जिंदगी जीने के बदले मरना ही बेहतर है। इसीलिए उस स्त्री को गोली मार दिया जाता है। (कई बार तो वह स्वयं ही अपना अंत कर लेती है।) इस प्रकार के सारे चंगुलों से उसे मुक्त कर दिया जाता है। अब तो वह मुर्दा बन गई है। अब उस मुर्दे के साथ कुछ करे या ना करे क्या फर्क पड़ता है ?

"अतः उसने अपने ही रिवालवर से उस
लड़की को गोली मार दी
मुक्त कर दिया उसको उसके ही शरीर से
अब उसके शरीर के साथ चाहे जो हो बर्ताव
क्या फर्क पड़ता है।"[10]

अपनी जान सबसे ज्यादा कीमती होती है हर किसी के लिए। मगर इन नृशंसको के डर से अपनी जान को भी खुद ही लेना पड़ता है-

"देखिए ना जान से भी ज्यादा मूल्यवान
यौन शुचिता
नृशंसको के नैतिक विधान के लिए।"[11]

यदि संक्षेप में कहा जाए तो बद्रीनारायण एक ऐसे कवि हैं जो जनता के दिल में उतरकर और उनकी जिंदगी में जाकर; उनकी हर एक समस्याओं से रूबरू होकर उनकी आवाज बनकर कविताओं के जरिए लेखनी चलाते हैं। उनके हक के लिए प्रतिरोध करते हैं।

सन्दर्भ :

1. बद्रीनारायण- चिड़ियों के निष्कासन के खिलाफ एक बयान-पृ. 33
2. वहीं-पृ. 33
3. वहीं-पृ. 33
4. बद्रीनारायण- चिड़ियों के निष्कासन के खिलाफ एक बयान-पृ. 34
5. बद्रीनारायण- चिड़ियों के निष्कासन के खिलाफ एक बयान –पृ. 34
6. वही – पृ. 34
7. वही – पृ. 34
8. बद्रीनारायण – संस्कृति –पृ. 70
9. वही – पृ. 70
10. वही – पृ. 70
11. बद्रीनारायण – संस्कृति – पृ. 70